vate parties only for the sale of fertilisers and pesticides to farmers;

(b) if so, what are the reasons for not distributing and marketing the fertilisers by Government agencies;

(c) whether it is also a fact that private parties having licences are indulging in the adulteration of these fertilisers and p sticdes; and

(d) if so, what steps are being taken to control the sale of fertilisers and pestcides by Govtrnment-owned agencies by cancelling all the licences to the parties in private sector?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF AGRICULTURE AND COOPERATION IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI YOGENDRA MAKWANA): (a) No Sir. Certificates of Registration for sale of fertilisers and pesticides are granted by the State Governments to cooperatives and other state institutional agencies, besides private parties.

(b) Does not arise.

(c) No reports have been received that private parties licenced for sale of fertilisers and pesticides are indulging in adulteration. The State Governments are competent to take action against the persons indulging in adulteration of fertilisers and pesticides under Fertiliser (Control) Order, 1985 and Insecticides Act, 1968.

(d) Does not arise.

**हिन्दी में पुस्तकों का लिखना**

2189. **श्री रामचन्द्र विकल** : क्या कृषि मंत्री 31 जुलाई, 1987 और 6 नवम्बर, 1987 को क्रमशः अतारांकित प्रश्न 697 और 41 के दिये गये उत्तरों को देखेंगे और यह बताने की कृपा करेंगे कि

(क) क्या हिन्दी में मौलिक पुस्तकों के लेखनके लिये कोई योजना बनाई गयी है; यदि हां, तो ऐसे विभागों के नाम क्या हैं जिन्होंने इस योजना को क्रियान्वित किया है और अब तक कितनी पुस्तकों को पुरस्कृत किया गया है; और

(ख) हिन्दी सप्ताह का आयोजन करने वाले विभागों के नाम क्या हैं; और उन्होंने ऐस सप्ताहों का आयोजन किन-किन तारीखों को किया; हिन्दी विद्वानों के नाम क्या हैं तथा हिन्दी सलाहकार समिति के उन सदस्यों के नाम क्या हैं जिन्ह आमंत्रित किया गया था और क्या उसका कोई प्रतिबेदन तैयार कर प्रकाशित किया गया है ?

**कृषि मंत्रालय में कृषि और सहकारिता विभाग में राज्य मंत्री (श्री योगेन्द्र मकवाणा)** : (क) ग्रामीण विकास तथा कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभागों की हिन्दी में लिखी गई सुपात्र पुस्तकों को पुरस्कृत करने की एक योजना है। ग्रामीण विकास विभाग ने किसी अवधि विशेष के दौरान सबसे अच्छी पायी जाने वाली हिन्दी की मूल पुस्तकों के लिये 3 पुरस्कार प्रदान करने की योजना शुरु की है इस योजना का नाम ग्रामीण विकास साहित्य पुरस्कार योजना है और यह 1984–85 तथा 1985–86 वर्ष-खंड के दौरान लागू की गई है। इन वर्षों के दौरान दो पुस्तकें 5000 रु० का पहला पुरस्कार तथा 2,500 रु० का दूसरा इनाम पाने की सुपात्र पायी गई। यह योजना 1986–87 और 1987–88 वर्ष-खंडों में जारी रखी जा रही है। अब पहले तथा दूसरे पुरस्कारों की धनराशियां बढ़ाकर क्रमशः 10,000 रु० तथा 7,000 रु० कर दी गई हैं। 5,000 रुपये का तीसरा इनाम भी शुरू किया गया है।

कृषि और पशु विज्ञान पर हिन्दी में मूल पुस्तकों के लेखकों को प्रोत्साहन देने के लिए कृषि अनुसंधान तथा शिक्षा विभाग (भा०कृ अ०प०) में डा० राजेन्द्र प्रसाद पुरस्कार 1975 में प्रारंभ किया गया था ताकि इन क्षेत्रों में हिन्दी की उपयुक्त पुस्तकों कीक जरूरत पूरी हो सके। अब तक 33 लेखक डा० राजेन्द्र प्रसाद पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। इस योजना के अन्तर्गत दिये जाने वाले पहले, दूसरे तथा तीसरे इनामों की रकमें

भी क्रमश: 5000 रु० 2,500 रु० तथा 1,500 रु० से बढ़ाकर 10,000 रु० 5,000 रु० तथा 3,000 रु० तक कर दी गई हैं ।

(ख) गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग) द्वारा तैयार किए गए वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार विभिन्न मंत्रालयों/विभागों को 1987-88 में एक बार हिन्दी दिवस अथवा हिन्दी सप्ताह मनाना है । तदनुसार ग्रामीण विकास विभाग ने राज्य मंत्री (ग्रामीण विकास) की अध्यक्षता में 14-9-87 को हिन्दी दिवस मनाया । कृषि मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति के निम्नलिखित सदस्यों तथा अन्य गैर-सरकारी व्यक्तियों को हिन्दी दिवस समारोह में आमंत्रित किया गया था ।

1. श्री सुधाकर पांडेय, वाराणसी
2. श्री विजय शंकर मल्ल, वाराणसी
3. डा० एन० रमण नायर, कोच्चिन
4. डा० एस० कृष्णामूर्ति, बंगलौर
5. डा० कुमार विमल, पटना
6. श्री हिमांशु जोशी, नई दिल्ली
7. श्री राम चन्द्र भारद्वाज, नई दिल्ली
8. श्री कन्हैया लाल नन्दन, नई दिल्ली
9. श्री गोतेश शर्मा, कलकत्ता ।

ग्रामीण विकास विभाग की पत्रिकाओं, ग्रामीण विकास पत्रिका के अगस्त-सितम्बर, 1987 के अंक में तथा कुरुक्षेत्र (हिन्दी) के अक्तूबर, 1987 के अंक में हिन्दी दिवस सामरोह सम्बन्धी एक समाचार प्रकाशित हुआ था ।

इस वर्ष सितम्बर माह में कृषि अनुसंधान तथा शिक्षा विभाग (भा कृ०अ०प०) और उर्वरक विभाग में भी हिन्दी दिवस/हिन्दी सप्ताह मनाया गया । कृषि तथा सहकारिता विभाग का भी शीघ्र ही हिन्दी दिवस/हिन्दी सप्ताह बनाने का प्रस्ताव है ।

**आई०सी०ए०आर० में पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाएं**

1290. **श्री राम चन्द्र विकल :** क्या कृषि मंत्री 31 जलाई, 1987 तथा 6 नवम्बर, 1987 को राज्य सभा में अतारांकित प्रश्न क्रमश: 679 तथा 41 के दिये गये उत्तर को देखेंगे और यह बताने की कृपा करेंगे कि आई सी०ए०आर० में इस समय कुल कितनी पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकायें हैं तथा उनमें से कितनी हिन्दी पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाएं हैं; वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर गत तीन वर्षों के दौरान कितनी धनराशि खर्च की गई तथा क्या यह सच हैं कि हिन्दी पुस्तकों की खरीद की जानबूझकर उपेक्षा की गई हैं ?

**कृषि मंत्रालय में कृषि और सहकारिता विभाग में राज्य मंत्री (श्री योगेन्द्र मकवाणा) :** सूचना एकत्र की जा रही है और उसे सभा के पटल पर रख दिया जाएगा ।

**Acquiring of New Acquipment by Akashwani and Doordarshan**

2191. SHRI PUTTAPAGA RADHAKRISHNA:
SHRI B. SATYANARAYAN REDDY:

Will the Minister of INFORMATION AND BROADCASTING be pleased to state:

(a) what was the total amount spent by the Akashvani and Doordarshan respectively on Reliance Cup Cricket either by way of acquiring new equipment or otherwise;

(b) how much was spent by these two official media in similar ways on non-cricketing sport events including the Seoul Asiad, World Cup Football and World T.T. during the last one year; and